हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास (मध्ययुगीन इतिहास एवं काव्य) शेषभाग-2

आधुनिककाल

प्रश्न :- आधुनिक काल (पद्य) की प्रवृत्तियों को बतायें?

उत्तर - शेष भाग :-

द्विवेदी युग

सन् 1900 ई० में 'सरस्वती' के प्रकाशन के साथ द्विवेदी युग का प्रारम्भ होता है। यह युग खड़ी-बोली के आन्दोलन का युग है। महावीरप्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' मैथिलीशरण गुप्त आदि के प्रयत्नों से काव्य में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ीबोली का सफलतापूर्वक प्रयोग होने लगा। इस युग की कविता को हम आदर्शवादी काव्य-परम्परा का युग कह सकते हैं। यह काव्य-युग भारतेन्दु-कालीन प्रवृत्तियों का विकासकाल कहा जा सकता है। श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय, सियाराम शरण गुप्त आदि की कृतियों में राष्ट्रीयता, समाज-सुधार, भारत का गौरव-गान तथा देश में नव-जागरण का स्वर सुना जा सकता है।

इस युग में उपदेशात्मक, वर्णन-प्रधान इतिवृत्तात्मक कविता की ही प्रधानता थी, जिसका मुख्य उद्देश्य धर्म और नैतिकता का उपदेश है। इस युग की धार्मिक तथा देश-प्रेम की भावना भारतेन्दु युग से अधिक उदार तथा व्यापक है। कविता की विविध विधाओं का विकास (जैसे महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक, प्रगीत आदि) इस युग में द्रष्टव्य है। 'साकेत' और 'प्रिय-प्रवास' इस युग के दो प्रतिनिधि महाकाव्य हैं, जिनमें द्विवेदीयुगीन भाव, भाषा, छन्द आदि की सभी प्रवृत्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि द्विवेदी युग का महत्व नए विषयों और नई भाषा दोनों दृष्टियों से है।

(शेष बचा है)

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M), दिनांक -10.02.2023
मो० नं० - 7909096087